IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, November 2022
Impact Factor: 6.252

भारतीय ज्ञान परंपरा और दर्शन

डॉ. हृदय नारायण तिवारी
सहायक प्राध्यापक
एकलव्य विश्वविद्यालय, दमोह, मध्य प्रदेश
hntiwariojaswini@gmail.com

मानव इस संसार का बौद्धिक व विकासशील प्राणी है। यह इस संसार में अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए सदैव संघर्ष एवं प्रगति करता है। वह सभ्यता के आरंभ से ही संपूर्ण ब्रह्मांड, उसके निर्माता और अपने स्वयं के जीवन के स्वरूप, समस्याओं, रहस्यों एवं लक्ष्यों के संदर्भ में जीवन पर्यंत अनवरत चिंतन करता रहता है। इसी चिंतन के परिणाम स्वरूप जो तथ्य, निष्कर्ष, विश्वास एवं सत्य प्राप्त हुए उस पर निरंतर अग्रसर होता रहा है। मानव के इन्हीं प्रयासों के फलस्वरूप ही दर्शन के संप्रत्यय का विकास हुआ। दर्शन में किसी समस्या के बारे में जानने के लिए गहराई से, निष्पक्षता से, खुले दिमाग से और तार्किक ढंग से चिंतन करने पर जोर दिया जाता है, ताकि व्यक्ति अज्ञान, जल्दबाजी, बिना सोचे- समझे और गैर जिम्मेदारी से कार्य न करें और समाज में उसका सामंजस्य न बिगड़ जाए। जैसे- एक रुपए के सिक्के के एक ओर कोई चित्र अंकित होता है और दूसरी ओर उसका मूल्य अंकित होता है। ऐसा होने पर ही वह सिक्का मूल्यवान माना जाता है। उसी प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा उस सिक्के के चित्र वाले हिस्से का पक्ष होती है और दूसरा पक्ष दर्शन होता है। यदि एक सिक्के पर एक ओर उसका चित्र ही हो लेकिन उसके दूसरी ओर उसका मूल्य अंकित ना हो, तो उसे कोई सिक्का नहीं कहेगा। यहां तक कि उसे भिखारी भी नहीं लेगा। यही स्थिति भारतीय ज्ञान परंपरा, शिक्षा संस्था, शिक्षक और शिक्षा व्यवस्था की होती है। यदि उसका अपना कोई दर्शन नहीं है तो वह खोटे सिक्के की भांति ही माना जाएगा। इसलिए वर्तमान में भारतीय ज्ञान परंपरा के साथ-साथ दार्शनिक दृष्टिकोण को साथ लेकर चलने की अत्यंत आवश्यकता है।

दर्शन शब्द संस्कृत की दृश धातु से बना है, जिसका अर्थ है- देखना। दृश्यते अनेन इति दर्शनम अर्थात जिसके द्वारा देखा जाए अथवा जिसके द्वारा सत्य के दर्शन किए जाएं, वह दर्शन है। हिंदी भाषा का दर्शन शब्द अंग्रेजी भाषा के फिलॉसफी (Philosphy) शब्द का पर्याय है। अंग्रेजी भाषा के फिलासफी शब्द की व्युत्पत्ति ग्रीक भाषा के दो शब्दों फिलोस (Philos) तथा सोफिया (Sophia)से हुई है। फिलोस शब्द का अर्थ है- प्रेम या अनुराग (Love) तथा सोफिया शब्द का अर्थ है- विद्या या ज्ञान (Wisdom)। इस प्रकार फिलॉसफी शब्द का अर्थ हुआ ज्ञान के प्रति प्रेम या अनुराग (Love of Wisdom)। फिलॉसफी शब्द की व्युत्पत्ति के आधार पर ज्ञान की खोज करने एवं उसके वास्तविक स्वरूप को समझने की कला को दर्शन कहते हैं।

दर्शन का प्रारंभ आश्चर्य,बेचैनी, जिज्ञासा, संदेश तथा अशांति आदि से होता है। दर्शन मानव चिंतन की उच्चतम सीमा है। इसका संबंध विचारों से होता है। यह जीवन का प्रत्येक दृष्टिकोण है। इसके अंतर्गत संपूर्ण ब्रह्मांड एवं मानव जीवन के वास्तविक स्वरूप, सृष्टि- सृष्टा, आत्मा- परमात्मा, जीव- जगत, ज्ञान- अज्ञान, ज्ञान प्राप्त करने के साधन और मनुष्य के करणीय तथा अकरणीय कर्मों का तार्किक विवेचन किया जाता है। इसलिए दर्शन को चिंतन तथा खोज का विषय भी कहा जाता है। प्राचीन काल से भारत में वेदों में दार्शनिक तत्वों का विशद विवेचन प्राप्त होता है। अतः भारत को दर्शन की गुरुस्थली माना जाता है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, November 2022
Impact Factor: 6.252

भारतीय दर्शन की दृष्टि अत्यंत सूक्ष्म एवं व्यापक है, साथ ही साथ अत्यंत उदार भी। इतिहास इस बात का साक्षी है कि भारत ही नहीं अपितु समस्त संसार के प्राचीनतम ग्रंथ वेद ही हैं। भारतीय दर्शन का स्रोत वेद है। वेद कोई दार्शनिक ग्रंथ नहीं है, वरन दर्शनों के आधारभूत ग्रंथ हैं। वेदों ने वाद के भारतीय दर्शनों पर अत्यधिक प्रभाव डाला और जिन्हें आज हम षड्दर्शन कहते हैं- वे सभी वेदों को मानने वाले हैं। कुछ दर्शन वेदों को नहीं मानते। ऐसे तीन दर्शन हैं- चार्वाक, बौद्ध, तथा जैन। इस दृष्टि से भी वेदों का महत्व है, अर्थात भारत में जो चिंतन हुआ, वह या तो वेदों के समर्थन के लिए या फिर खंडन के लिए। वस्तुतः पहले नास्तिक शब्द वेद निंदक के लिए ही प्रयुक्त होता था, बाद में इसका अर्थ अनीश्वरवादी हो गया। नास्तिक शब्द के पहले अर्थ में केवल चार्वाक, बौद्ध तथा जैन दर्शन नास्तिक हैं और दूसरे अर्थ में मीमांसा और सांख्य भी आते हैं, क्योंकि यह भी ईश्वर को नहीं मानते। एक अन्य अर्थ के अनुसार नास्तिक उसे कहते हैं जो परलोक में विश्वास नहीं करता है। इस अर्थ में षड्दर्शन तथा जैन एवं बौद्ध दर्शन भी आस्तिक दर्शन हो जाते हैं और केवल चार्वाक दर्शन नास्तिक है। वेद वास्तव में एक ही है और उसी से चार वेद बन गए हैं, जैसा कि सनतसुजात के कथन से विदित होता है- एकस्य वेदास्याज्ञानाद वेदास्ते बहवः कृताः। अर्थात अज्ञानवश एक ही वेद के अनेक वेद कर दिए गए हैं।

स्थूल दृष्टि से वेद को कर्म-कांड एवं ज्ञान- कांड में विभक्त किया गया है। कर्म-कांड में उपासनाओं का तथा ज्ञान- कांड में आध्यात्मिक तत्वों का विवेचन है। देवताओं की स्थितियों में अनेक मंत्र हैं। ऋग्वेद के दशम मंडल के 121वें सूक्त में हिरण्यगर्भ की स्तुति की गई है। इस सूक्त से आध्यात्मिक चिंतन का अच्छा परिचय प्राप्त होता है। वेदों में ब्रह्मा की व्यापकता एवं अनश्वरता के विषय में अनेक सूक्त हैं। अथर्ववेद के स्तंभ सूक्त में ब्रह्म की व्यापकता एवं आत्मा की अभिन्नता का विवेचन है। वेद के अंतिम अंश उपनिषद हैं। वैदिक मंत्रों को चार भागों में बांटा गया है- संहिता, ब्रह्मांड, आरण्यक तथा उपनिषद। प्रथम तीन भागों में स्तुति, उपासना एवं यज्ञ का वर्णन है और इनमें तर्क- वितर्क का स्थान नहीं है। उपनिषदों में तर्क- वितर्क की प्रधानता है। उपनिषदों में आत्मा को पूर्ण, अखंड एवं अनश्वर बताया गया है। ब्रह्म के मूर्त एवं अमूर्त दो रूप बताए गए हैं। उपनिषदों के अनुसार मानव जीवन का लक्ष्य मोक्ष है।

श्रीमद्भागवत गीता नीतिशास्त्र का विश्वविख्यात ग्रंथ है। इसमें भगवान कृष्ण ने अर्जुन को उपदेश दिया है। गीता का मुख्य संदेश निष्काम कर्म है, अर्थात बिना फल की इच्छा किए हुए कर्तव्य करना चाहिए। आत्मा अजर - अमर है। गीता में ज्ञान, भक्ति एवं कर्म तीनों मार्गों की महिमा बताई गई है, किंतु निष्काम कर्म को सुगम एवं उत्तम साधन के रूप में स्वीकार किया गया है।

चार्वाक दर्शन भौतिकतावादी दर्शन है। इसके अनुसार जड़ जगत सत्य है और यह वायु,अग्नि, जल तथा पृथ्वी इन चार भौतिक तत्वों से बना है।चेतना की उत्पत्ति भौतिक तत्वों से ही होती है। आत्मा शरीर को ही कहा जाता है। शरीर के नष्ट होने पर चैतन्य जो भौतिक तत्वों का विशेष गुण है नष्ट हो जाता है। मृत्यु के बाद कुछ नहीं बचता।केवल प्रत्यक्ष ही प्रमाण है और अनुमान आदि अन्य प्रमाण संदिग्ध हैं। परलोक, वेद, ईश्वर आदि को यह दर्शन स्वीकार नहीं करता है। इसके अनुसार जब तक जिए, सुख से जिए का सिद्धांत सर्वोत्तम सिद्धांत है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, November 2022
Impact Factor: 6.252

जैन दर्शन के अनुसार प्रत्यक्ष के अतिरिक्त अनुमान एवं शब्द भी प्रमाण हैं। भौतिक जगत को जैन दार्शनिक भी चार्वाक की भांति वायु, अग्नि, जल एवं पृथ्वी इन्हीं चार तत्वों के मिश्रण से निर्मित मानते हैं। जैन दार्शनिकों के अनुसार चैतन्य की उत्पत्ति जड़ पदार्थों से नहीं हो सकती। सांसारिक जीवन से छुटकारा पाने के लिए सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान, सम्यक चरित्र तीन उपाय बताए गए हैं। सभी प्राणियों के प्रति दयाभाव जैन दर्शन एवं धर्म का विशेष गुण है।

महात्मा गौतम बुद्ध के उपदेशों से बौद्ध- दर्शन का जन्म हुआ। जरा, रोग तथा मृत्यु को देखकर सिद्धार्थ अत्यंत पीड़ित हुए थे और उन्होंने दुखों से छुटकारा पाने का उपाय ढूंढने में ही वर्षों तक तपस्या की। अंततः उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया।

इसके बाद षड्दर्शन की परंपरा आती है। यद्यपि षड्दर्शन के विषय में मतभेद है किंतु कुछ लोग न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदांत को षड्दर्शन कहना पसंद करते हैं। इन 6 दर्शनों का स्रोत वेद है।

न्याय - यह यथार्थवादी दर्शन है। न्याय के अनुसार चार प्रमाण हैं- प्रत्यक्ष,अनुमान,उपमान तथा शब्द। मन अणु के रूप में है। चेतना आगंतुक गुण है। मृत्यु के पश्चात आत्मा चेतना विहीन हो जाता है। आत्मा नित्य है किंतु चेतना नित्य नहीं है।

वैशेषिक - न्याय के साथ वैशेषिक दर्शन की बड़ी समानता है।इसलिए न्याय वैशेषिक को एक जोड़े के रूप में देखा जाता है।अपवर्ग प्राप्त करना वैशेषिक दर्शन का भी लक्ष्य है।

सांख्य - इस दर्शन के अनुसार दो मूल तत्व हैं- प्रकृति तथा पुरुष। दोनों की निरपेक्ष सत्ता है। पुरुष चेतन है, नित्य है एवं पृथक द्रष्टा है। पुरुष एक नहीं अनेक हैं। संसार का आदि कारण प्रकृति है। यह नित्य है किंतु चेतना विहीन वस्तु है। सांख्य दर्शन में ईश्वर को केवल द्रष्टा माना है, सृष्टा नहीं।

योग - सांख्य और योग में बड़ा साम्य है। इसलिए सांख्य और योग का जोड़ा साथ चलता है। योग दर्शन में ईश्वर को स्वीकार किया गया है। योग दर्शन में योगाभ्यास द्वारा विवेक की प्राप्ति को संभव बताया गया है। चित्तवृत्ति के विरोध को योग कहते हैं। योग के आठ अंग- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान तथा समाधि बताए गए हैं।

मीमांसा - इस दर्शन में वैदिक कर्मकांड का विवेचन किया गया है। मीमांसा के अनुसार वेद नित्य अपौरुषेय हैं। वेद की प्रामाणिकता एवं अपौरुषेयता सिद्ध करने के लिए मीमांसा में अनेक प्रमाण दिए गए हैं। वेद सम्मत कर्म ही धर्म है एवं वेद द्वारा निषिद्ध कर्म अधर्म है। भौतिक जगत की सत्ता को भी मीमांसा में स्वीकार किया गया है।

वेदांत - मीमांसा एवं वेदांत को एक जोड़े के रूप में देखा जाता है। इसलिए कभी-कभी मीमांसा को पूर्व मीमांसा एवं वेदांत को उत्तर मीमांसा कहा जाता है। वेदांत दर्शन का आधार उपनिषद है।

भारतीय दर्शन का विषय क्षेत्र अति व्यापक है। इसमें संपूर्ण ब्रह्मांड और उसकी समस्त वस्तुएं एवं क्रियाओं के वास्तविक स्वरूप की खोज की जाती है। किंतु भारतीय चिंतकों ने इसे मूलतः तीन भागों में विभक्त किया है- ज्ञान मीमांसा, तत्व मीमांसा एवं मूल्य मीमांसा।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, November 2022
Impact Factor: 6.252

ज्ञान मीमांसा - इसके अंतर्गत ज्ञान की उत्पत्ति, उसकी संरचना, उसकी प्रकृति और उसकी सीमाओं के विषय में अध्ययन किया जाता है। जैसे- क्या मानव बुद्धि वास्तविक ज्ञान को प्राप्त कर सकती है? मनुष्य किस सीमा तक परम सत्ता का ज्ञान प्राप्त कर सकता है? ज्ञान प्राप्त करने के साधन क्या हैं? सत्य क्या है? भ्रम क्या है? आदि।

तत्वज्ञान मीमांसा - इसके अंतर्गत यथार्थ की प्रकृति का अध्ययन किया जाता है। इसमें जगत और व्यक्ति के अस्तित्व के विषय में जानकारी प्राप्त की जाती है। इसमें दर्शन के निम्नलिखित पांच विभाग होते हैं-

आत्मा संबंधी तत्वज्ञान - इसके अंतर्गत आत्मा और जीव से संबंधित प्रश्नों पर विचार किया जाता है। जैसे- आत्मा क्या है? जीव क्या है? आत्मा का जीव से क्या संबंध है? आदि।

ईश्वर संबंधी तत्वज्ञान - इसके अंतर्गत ईश्वर के अस्तित्व, उसके स्वरूप, उसकी एकरूपता अथवा अनेकरूपता आदि प्रश्नों पर विचार किया जाता है। जैसे - ईश्वर का अस्तित्व है या नहीं, ईश्वर एक है या अनेक, ईश्वर का स्वरूप कैसा है, यदि ईश्वर का अस्तित्व है तो इसका प्रमाण क्या है आदि।

सृष्टि संबंधी तत्वज्ञान - इसके अंतर्गत सृष्टि की रचना और विकास से संबंधित प्रश्नों पर विचार किया जाता है -जैसे सृष्टि से क्या अभिप्राय है, क्या सृष्टि की रचना भौतिक तत्वों से हुई है या आध्यात्मिक आदि।

सत्ता संबंधी तत्वज्ञान - इसके अंतर्गत सत्ता के स्वरूप से संबंधित प्रश्नों पर विचार किया जाता है। जैसे- सृष्टि के नश्वर तत्व कौन- कौन से हैं एवं अनश्वर तत्व कौन- कौन से हैं आदि।

सृष्टि उत्पत्ति संबंधी तत्वज्ञान - इसके अंतर्गत सृष्टि की उत्पत्ति के विषय में विचार किया जाता है। जैसे- सृष्टि अथवा जगत की उत्पत्ति किस आधार पर हुई, क्या सृष्टि की रचना हुई है? यदि रचना हुई है तो यह रचना किसने की है आदि।

मूल्य मीमांसा - मूल्य मीमांसा दर्शन की वह शाखा है जिसमें मानव जीवन के आदर्शों एवं मूल्यों की तार्किक विवेचना की जाती है तथा मानव के करणीय एवं अकरणीय कर्मों की विवेचना आती है। करणीय और अकरणीय कर्मों की विवेचना को ही नीतिशास्त्र की संज्ञा दी जाती है। यह सर्वविदित है कि कोई भी आदर्श मूल्य का रूप तभी धारण करता है जब वह हमारे आचरण में परिलक्षित होता है। मूल्य और आचरण एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। मूल्य हमारे व्यवहार अर्थात आचरण को निर्देशित एवं नियंत्रित करते हैं और हमारा आचरण इन मूल्यों को प्रदर्शित करता है। मूल्य मीमांसा के अंतर्गत तीन विभाग आते हैं-

नीतिशास्त्र - इसके अंतर्गत मनुष्य के आचरण से संबंधित विषयों पर विचार किया जाता है। इसमें व्यक्ति के आचरण से संबंधित समस्याओं जैसे -कर्म-अकर्म, शुभ -अशुभ, भद्र- अभद्र आदि का विचार करके यह विश्लेषित किया जाता है कि मनुष्य को क्या करना चाहिए क्या नहीं। इसमें जिन प्रश्नों पर विचार किया जाता है वे हैं -भद्र क्या है? अभद्र क्या है? भद्र आचरण के लक्षण क्या हैं? हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए आदि।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, November 2022
Impact Factor: 6.252

सौंदर्यशास्त्र - इसके अंतर्गत सौंदर्य संबंधी विभिन्न समस्याओं पर विचार किया जाता है, जैसे- सौंदर्य क्या है ? सौंदर्य के लक्षण क्या हैं? सौंदर्य के मानदंड क्या हो सकते हैं ?आदि।

तर्कशक्ति - इसके अंतर्गत तर्कपूर्ण चिंतन, कल्पना अथवा अनुमान, उसके लक्षण, तर्क की पद्धति आदि के विषय में विचार किया जाता है। जैसे -तार्किक चिंतन का स्वरूप क्या है? आदि।

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या मनुष्यों को मूल्यों का बोध अथवा अनुभूति उसी प्रकार होती है, जिस प्रकार हमें संसार के तथ्यों और घटनाओं का बोध अथवा प्रतीति होती है। इस विषय पर अनेकानेक लोगों के अनेकानेक मत हैं। परंतु निष्कर्षतः यही निर्णय उचित जान पड़ता है कि मूल्य तथ्यों (Facts) से भिन्न है। परंतु मूल्यों और तथ्यों का एक दूसरे से संबंध है और दोनों के बीच में क्रिया- प्रतिक्रिया होती रहती है। मूल्य युग परिवर्तन के साथ- साथ बदलते रहते हैं। वर्तमान वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी प्रधान युग में शिक्षा के प्रसार के बावजूद जीवन मूल्यों में ह्रास दिखाई दे रहा है। मूल्य आधारित जीवन शैली को ध्यान में रखते हुए यह जरूरी है कि विद्यालयों में मूल्यों के विकास हेतु विशिष्ट एवं संगठित प्रयत्न किए जाएं, क्योंकि जिस भारतीय दर्शन को संपूर्ण विश्व स्वीकार करता है,उसके पीछे मूल्य ही हैं जो हमारी अस्मिता को कायम रखे हुए हैं।

इस प्रकार निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भारतीय दर्शन में उन सभी समस्याओं का हल है जिसे अपनाकर व्यक्ति -जीवन को सुखमय बनाया जा सकता है, क्योंकि भौतिक संसाधनों की उपलब्धता सुख का कारण नहीं अपितु दुख का कारण है। हमें कब उठना है, कब सोना, कैसे भोजन करना, कैसे लेटना, कैसा व्यवहार करना, क्या पहनना, क्या देखना, क्या सुनना आदि सभी प्रश्नों का उत्तर भारतीय दर्शन से सहज रूप में प्राप्त हो जाता है। आवश्यकता इस बात की है कि हमें संकल्प लेना होगा कि हम अपने संस्कृति की रक्षा के लिए शाश्वत मूल्यों का अनुगमन करें।

संदर्भ :

1.सक्सेना, संजय कुमार, शिक्षा के दार्शनिक सिद्धांत, आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ, 2007
2.सिंह, नारायण, मार्क्स और गांधी का साम्य दर्शन, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग,2000
3.सिंह, गया प्रसाद, उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, 2013
4.लाल एवं तोमर, विश्व के श्रेष्ठ शैक्षिक चिंतक, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, 2008
5. त्रिपाठी, डॉ नरेश चंद्र, शिक्षा के नूतन आयाम, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, 2007
6. दैनिक भास्कर समाचार पत्र, 11 जनवरी, 2019
7. नई दुनिया समाचार पत्र, 14 मई, 2020
8. पत्रिका समाचार पत्र, 22 जून, 2021